विश्व नागरिक बनते युवा

चार्लीन पोर्टर

एड हैरिसन, रोटरी इंटरनेशनल

किसी भी इंटरनेट सर्च इंजन में स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम शब्द टाइप करिए और आपको सदर्भ के लिए 28 लाख लिंक मिल जाएंगे। इन कार्यक्रमों के जरिये दुनिया के अन्य भागों में दिलचस्पी रखने वाले युवाओं को अध्ययन, रोजगार और स्वयंसेवा के कई तरह के अवसर हासिल हो सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर युवा एक्सचेंज कार्यक्रमों का दायरा बहुत व्यापक है। इस काम में लगे सारे संगठनों की गिनती करना भी मुश्किल है। एक्सचेंज कार्यक्रमों में शामिल होने वाले युवाओं की सही-सही संख्या के बारे में बताना तो और मुश्किल है। हां, यह जानना अपेक्षाकृत आसान है कि एक्सचेंज कार्यक्रम क्यों ज़रूरी हैं और इनसे क्या लाभ हैं।

''शैक्षिक एक्सचेंज कार्यक्रमों के जरिये राष्ट्रों को हम वहां के नागरिकों के स्तर पर जोड़ सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक मानवीय पुट वाला और कोई संचार कार्यक्रम नहीं हो सकता।'' ये शब्द सेनेटर जे. विलियम फ़ुलब्राइट के हैं जिन्हें अमेरिका में सरकार द्वारा प्रायोजित एक्सचेंज कार्यक्रमों का जनक माना जाता है। एक्सचेंज कार्यक्रमों के लाभों के बारे में उनके विचार बहुत से संगठनों द्वारा इस बारे में तय लक्ष्यों के अनुरूप हैं।

60 साल से जारी फ़ुलब्राइट शोधवृत्ति कार्यक्रम अरकान्सस के इस पूर्व सेनेटर के नाम पर ही है। उन्होंने ही वर्ष 1946 में उस कानून के लिए पहल की थी जिससे इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तब से अब तक 138,000 विदेशी शोधार्थी, अध्यापक और विद्यार्थी इसके तहत अमेरिका आ चुके हैं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अपना व्यक्तिगत अनुभव हासिल कर पाए हैं। इसी तरह इस कार्यक्रम के तहत 82,000 अमेरिकियों ने दूसरे देशों की यात्राएं की हैं और वहां के लोगों और संस्कृति को जाना-समझा है।

फ़ुलब्राइट कार्यक्रम को अमेरिका के एक्सचेंज कार्यक्रमों का सबसे प्रमुख कार्यक्रम माना जाता है।

ऊपर: रोटरी एक्सचेंज के तहत अमेरिका गए विद्यार्थी कैलिफ़ोर्निया-नेवादा सीमा पर स्कीइंग करते हुए। इनके चेहरे अपने देश के झंडों के रंग में रंगे हैं।

दाएं: एक्सचेंज विद्यार्थी के रूप में अमेरिका गए भारत के जॉर्ज थॉमस अपने साथी विद्यार्थियों के साथ।

लेकिन और भी बहुत से एक्सचेंज कार्यक्रम हैं। अमेरिकी विदेश विभाग के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक मामलों के ब्यूरो द्वारा हर साल 30 हज़ार लोगों को एक्सचेंज कार्यक्रमों के लिए प्रायोजित किया जाता है। एक अनुमान है कि इन कार्यक्रमों से पिछले 50 सालों में लगभग 10 लाख लोगों को अंतरराष्ट्रीय अनुभव हासिल हो सका है।

ये और अन्य सरकारी स्तर पर प्रायोजित एक्सचेंज कार्यक्रम एक्सचेंज कार्यक्रमों की दुनिया का एक हिस्सा हैं। शैक्षिक एवं सांस्कृतिक ब्यूरो आपको सही एक्सचेंज कार्यक्रम चुनने में मदद के लिए आपको एक डेटाबेस के जरिये मदद करता है। http://exchanges.state.gov/iexchanges/ सर्च साइट से आप यह जान सकते है कि आपके लिए कौनसा एक्सचेंज कार्यक्रम ठीक रहेगा। यहां दसवीं कक्षा के विद्यार्थी से लेकर, विश्वविद्यालयों के छात्र, अध्यापक और शोधार्थी सभी अपने मुताबिक कार्यक्रमों के बारे में जानकारी पा सकते हैं।

साभार: जॉर्ज थॉमस

कॉलेज और विश्वविद्यालय निजी स्तर पर प्रायोजित एक्सचेंज कार्यक्रमों के सबसे प्रमुख ठिकाने हैं। शैक्षिक दुनिया में एकसचेंज कार्यक्रमों के छात्रों को एक किस्म के राजदूतों की तरह लिया जाता है। अमेरिकी विदेश विभाग ने पिछले साल 591,000 छात्रों को अमेरिका में पढ़ने और एक्सचेंज कार्यक्रमों के तहत आने के लिए वीज़ा जारी किए। दूसरी ओर लगभग दो लाख अमेरिकी छात्र दूसरे देशों के शैक्षिक संस्थानों में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाने के लिए गए।

अब कॉलेज में जाने से पहले ही छात्र विदेश अध्ययन कार्यक्रमों में दिलचस्पी ले रहे हैं। लेकिन इस तरह की भागीदारी के बारे में सही आंकड़े जुटाना मुश्किल है। एक्सचेंज कार्यक्रमों से जुड़े समूहों से संबंध अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक यात्रा मानक परिषद का अनुमान है कि अमेरिका में हर साल 30 हज़ार माध्यमिक स्तर के विदेशी विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं। इस संगठन का एक्सचेंज कार्यक्रमों के लाभ के बारे में भी स्पष्ट संदेश है। वे दूसरे समुदायों की संस्कृतियों के बारे में सीधे-सीधे जानते हैं, ऐसा करने के दौरान वे ज़िंदगीभर के लिए दोस्त बनाते हैं, उन्हें दुनिया में विभिन्न लोगों के बीच संबधों का ज्ञान होता है और वे अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को समझने का महत्व जान पाते हैं।

माध्यमिक स्तर पर छात्र एक्सचेंज कार्यक्रम वर्ष 1949 से ही अमेरिका के जन राजनय का हिस्सा रहे हैं। ये कार्यक्रम विदेशी छात्रों को अमेरिकी हाई स्कूलों में पढ़ने और अमेरिकी मेजबान परिवारों के साथ रहने का अवसर प्रदान कर परस्पर समझदारी को बढ़ावा देते हैं। इन कार्यक्रमों में हासिल अनुभवों से सिर्फ विद्यार्थियों के सोचने-समझने के तरीकी में ही तब्दीली नहीं आती, बल्कि उनके देश में उनके दोस्त, परिवार वाले और शिक्षक भी प्रभावित होते हैं। मेजबान परिवार और इन छात्रों के संपर्क में आने वाले प्रायोजक और विद्यार्थी भी इससे लाभान्वित होते हैं।

सांस्कृतिक समझ विकसित करने में नई भाषाओं को सीखना महत्वपूर्ण बात है। अमेरिका में युवाओं के लिए इसके लिए नई पहल की गई। राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने वर्ष 2006 में राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा पहल की शुरुआत की जो अमेरिकी सरकार का सबसे नया एक्सचेंज कार्यक्रम है। इस पहल के तहत युवा अमेरिकियों को ज़रूरत के लिहाज से अति महत्व वाली भाषाओं जैसे अरबी, चीनी और भारतीय भाषाओं को सिखाने के लिए गहन प्रशिक्षण दिया जाता है।

अमेरिकी विदेश मंत्री कोडोलीज़ा राइस ने नवंबर 2006 में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता सप्ताह के मौके पर इस पहल की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, ''अरबी, चीनी, रूसी, हिंदी और फारसी जैसी महत्वपूर्ण भाषाओं के अध्ययन से युवाओं के सम्मुख अवसर बढ़ते हैं, उनका जीवन समृद्ध होता है और इससे हम दूसरी संस्कृतियों के प्रति अपना आदर जताते हैं।''

इस कार्यक्रम के तहत संस्थान माध्यमिक और कॉलेज स्तर के अमेरिकी विद्यार्थियों को नई भाषाएं सिखा रहे हैं। इसके अलावा जिन देशों में ये भाषाएं बोली जाती हैं, वहां भी विशेष संस्थानों में अमेरिकी छात्र पढ़ाई कर रहे हैं। इसके अलावा अमेरिकी छात्र फ़ुलब्राइट और गिलमैन स्कॉलरशिप कार्यक्रम के तहत भी विदेश में वहां की भाषा की पढ़ाई कर रहे हैं। अमेरिका के शैक्षिक परिसरों में दूसरे देशों के युवा अध्यापक आ रहे हैं जिससे कि वे अमेरिकी छात्रों को अहम भाषाएं सिखा सकें।

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक ब्यूरो की देखरेख में चलने वाला एक और एक्सचेंज कार्यक्रम है माध्यमिक शिक्षा हासिल कर चुके स्कूली विद्यार्थियों के लिए गर्मियों की छुट्टियों में यात्रा करने के साथ-साथ काम के मौके प्रदान करना। ये अवसर सिर्फ मान्यता प्राप्त शैक्षिक संस्थानों से डिग्री हासिल कर रहे छात्रों के लिए ही उपलब्ध हैं।

अब एक और नया रुझान उभर रहा है। अमेरिकी छात्र मौज-मस्ती के लिए अपनी छुट्टियां बिताने के बजाय दूसरे देशों में शिक्षा हासिल कर रहे हैं या फिर विकासात्मक गतिविधियों में हिस्सेदारी कर रहे हैं। इससे एक्सचेंज कार्यक्रमों में एक नया आयाम जुड़ रहा है।

चार्लीन पोर्टर *यूएसइनफ़ो में वैश्विक मसलों के प्रबंध संपादक हैं।*